रस- सिद्धान्त Contd.

अर्थात "दरिद्र प्रेत किसी शव को गोद में रखकर पहले उसकी त्वचा को उधेड़ता है, फिर फूले हुए कन्धे, नितम्ब और पीठ आदि अवयवों में लगे हुए दुर्गन्धयुक्त माँस को खाकर अत्यन्त दीन जैसा, व्याकुल हो इधर-उधर देखता हुआ, दाँत निकाले गोद में रखे हुए अस्थि-पंजर की संधियों में से माँस को नोच-नोचकर निर्भयता पूर्वक खा रहा है।"

यहाँ दरिद्र प्रेत आलम्बन, माँसभक्षण उद्दीपन, ग्लानि व्यभिचारी तथा नाक-भौं सिकोड़ना अभाव है। ~~इनसे~~ इनसे परिपुष्ट जुगुप्सा नामक स्थायी-भाव आस्वादकता को प्राप्तकर वीभत्स रस बनता है।

(8) अद्भुत रस -

शकुन्तला के अद्भुत जन्म के विषय में अनुसूया से जानकारी प्राप्तकर दुष्यन्त आश्चर्य-चकित होकर कहता है - "मानुषीभ्यः कथं नु स्यादस्य रूपस्य संभवः।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात॥
(अभि० शाकु० अंक)

अर्थात ऐसी सुन्दर रूप आकृति भला मानवीय स्त्रियों से कैसे हो सकती है? कान्ति से जगमगाती ज्योति धरती से उत्पन्न नहीं होती।

यहाँ पर 'शकुन्तला' - आलम्बन विभाव, अलौकिक सौन्दर्य' - उद्दीपन, 'दृष्टिपातादि' - अनुभाव तथा औत्सुक्य प्रभृति व्यभिचारियों से उपचित विस्मय स्थायीभाव अद्भुत रस का रूप धारण करता है।

इन रसों के स्थायीभावों को मम्मट ने क्रमशः इस प्रकार निर्दिष्ट किया है —

Scanned with CamScanner

" रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा और विस्मय- ये शृंगारादि रसों के क्रमशः स्थायीभाव कहे गए हैं।

'रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।
जुगुप्सा विस्मयश्चैव स्थायिभावाः प्रकीर्तिताः॥

इसी प्रकार व्यभिचारी भावों के संबंध में कहते हैं

मम्मट — "निर्वेदग्लानिशङ्काऽऽख्यास्तथाऽसूयामदश्रमाः।
आलस्यञ्चैव दैन्यञ्च चिन्ता मोहः स्मृतिर्धृतिः
व्रीडा चपलता हर्ष आवेगो जड़ता तथा।
गर्वो विषाद औत्सुक्यं निद्राऽपस्मार एव च॥
सुप्तं प्रबोधोऽमर्षश्चाऽप्यवहित्थमथोग्रता।
सुप्तं प्रबोधोऽमर्षश्चाऽप्यवहित्थमथोग्रता।
मतिर्व्याधिस्तथोन्मादस्तथा मरणमेव च॥
त्रासश्चैव वितर्कश्च विज्ञेया व्यभिचारिणः।
त्रयस्त्रिंशदमी भावाः समाख्यातास्तु नामतः॥

(1) निर्वेद — अपनी अवमानना निर्वेद है। ~~से~~ उत्पन्न बल का अपचय।
(2) ग्लानि — आधि-व्याधि से उत्पन्न बल का अपचय।
(3) शंका — अनर्थ की प्रतिपत्ति।
(4) असूया — दूसरों की उन्नति के प्रति असहिष्णुता।
(5) मद — गर्व और दुर्जनता से उत्पन्न मति।
(6) श्रम — निरन्तर कार्य में संलिप्तता से उत्पन्न भाव।
(7) आलस्य — दीर्घ कालिक कार्य करने से उत्पन्न उद्योग क्षीणता।
(8) दैन्यम् — दरिद्रता आदि से उत्पन्न भाव।
(9) चिन्ता — सन्तापादि करनेवाली मनोदशा।
(10) मोहः — विचित्तता ~~से~~ प्रेम।

Uma Pathak
Deptt. of Skt
B.A. III yr (Content)

Scanned with CamScanner